प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/25

मिल्क फीवर (दुग्ध ज्वर)

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

मिल्क फीवर (दुग्ध ज्वर)

- इसे हाइपोकैल्सिमिया या पारचुरियेन्टपपेरेसिस भीकहतेहै।
- यह उच्चदुग्ध उत्पादकता वाले 5 वर्ष से अधिक उम्र के गाय में होतीहै।
- यह बीमारी बच्चा देने के सयम होने वाला एक प्रमूख उपपचयी रोग है।
- मिल्क फीवर नाम होने के बावजूद इसमें बुखार नहीं होताहै।
- यह बीमारी बच्चा देने के 24 घण्टे से लेकर 48 घण्टे के बीच होते हैं। कुछ गायों में यह 72 घंटे तक होते देखा गया है।

कारण :-

1. प्रजनन से लेकर दुग्ध उत्पादन के शुरूआती दिनों में दुग्ध के द्वारा कैल्सियम का अत्यधिक नुकसान गाय के शरीर से होताहै।
2. सामान्य अवस्था में कैल्सियम का स्तर 8-10 mg/100mg रक्त होता है।
3. शरीर के 98 प्रतिशत कैल्सियम हड्डी में मौजूद होत है। यह मांसपेशी के संकुचन तथा फेलाव तथा फेलाव हेतु प्रमुख तत्व हैं।
4. यही कारण है कि कैल्सियम कम होन पर गाय मिल्क फीवर से ग्रसित होते हैं और जमीन पर लेट जाते है।

लक्षण :-

1. प्रथम चरण :-उत्तेजना की अवस्था, भूख कम होना, शरीर का तापमान सामान्य से कम होजाना, पशु इस अवस्था में अतिसंवेदन शीलतथा उत्तेजित होता है। पशु इस अवस्था में चिल्लाने लगते हैं।
2. द्वितीय चरण :-सीने के बल लेटना- इस अवस्था में पशु गिरकर सीने के बल लेट जाते हैं। इस अवस्था में भी भूख नहीं लगना, सुस्ती, मुँह सुखन, शरीर का तापमान घट जाना, हाथ पैर ठंडा हो जाना आदि लक्षण देखा जाता है।

इसमें पशु सिर तथा गर्दन टेढ़ा होकर पेट की आरे मुड़ जाता है, जिससे पशु का गर्दन S आकर का दिखता है।

3. तृतीय चरण :–बगल से लेटना–इस अवस्था में पशु चेतना शून्य होकर कॉमा में चले जाते है और बगल से लेट जातेहैं।हृदय गति 120 BPM तक बढ़ जाते हैऔर नारी गति निम्न स्तर पर जाने लगता है इस तरह पशु मात्र कुछ ही घंटे जीवित रह पाते हैं।

पहचान :–

1. यह बीमारी मुख्यतः लक्षणों के आधार पर पहचाने जाते हैं।
2. रक्त जाँच पर रक्त में निम्न कैल्सियम के स्तर का पता लगाकर पहचान किया जाता है।

चिकित्सा :–

1. रक्त के सिरम कैल्सियम को जितना जल्द हो सके बढ़ाना चाहिए ताकि मांसपेशी तथा तंत्रिका के क्षति को रोका जा सके तथा जानवर को आंशिक लकवाग्रस्त होकर लेटने से बचाया

जा सके।

2. कैल्सियम ग्लूकोनेट को शिरा में1 gm/45kg शरीर भार के अनुसाार चढ़ाया जाता है।
3. यहइलाज के एक घंटे के अंदर होता है अगर पशु उठ नहीं पा रहा होता था आवश्यक हो तो 12 घंटे के बाद पुनः चिकित्सा का दूसरा डोज दिया जा सकता है।

रोकथामः-

1. अनुत्पादक समय (शुष्क समय)मेंकैल्सियम की आपूर्ति में नियंत्रण रखना चाहिए।
2. इसके लिए कैल्सियम की मात्रा 50 gm प्रतिदिन यानि चारे को मात्र 0.5 प्रतिशत ही खिलाना चाहिए।
3. फॉस्फोरस की मात्रा 45gm प्रतिदिन देना चाहिए।
4. उच्च कैल्सियम स्तर वाले चारा जैसे अल्फा-अल्फा का सूखा घास या साइलेज को अनुत्पादक समय (शुष्क समय) में नहीं खिलाना चाहिए।
5. इस बीमारी की रोकथाम के लिए नियमित रूप से चारे की जाँच तथा मुत्र के अम्लता की जाँच आवश्यक है।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- अरविन्द कुमार दास, पल्लव शेखर एवं बिपिन कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN